अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 सबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना –

सत्त मानव प्रयासों से, भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य को बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता।

अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढ़ी साहित्य का पुनरावलोकन है। संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिए महत्वपूर्ण है, इसके अभाव में वस्तुनिष्ठ रूप से अनुसंधान कार्य को आगे नहीं बढ़ा सकता जब तक उसे ज्ञात न हो की उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है तब तक समस्या का निर्धारण और परिसीमन करने में तथा शोध कार्य की रूपरेखा तैयार करने में कठिनाई आती है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होती है।

साहित्य पुनरावलोकन के साधन–

साहित्य का पुनः अध्ययन शोध के क्षेत्र से जुड़ने व परिणाम की ओर अग्रसर होने में मदद करता है। साहित्य पुनरावलोकन के अभाव में शोध की पुनरावृत्ति हो सकती है। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु व उद्देश्य से विचलित न होने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए कुछ साधन इस प्रकार है–

- जर्नलस्,
- पुस्तके,
- दस्तावेज (विभिन्न शैक्षिक दस्तावेज),
- इनसायक्लोपिडिया,
- शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट,
- शोध सारांश, इत्यादि।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन–

शोध कार्य के लिए पूर्ववर्ती अध्ययन का ज्ञान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अध्ययन के विकास की श्रृंखला उसी से बनती है।

प्रस्तावित शोध से संबंधित साहित्य, सामाजिक अध्ययन के भौगोलिक विषयांश संबंधी अध्ययन का सारांश इस अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है, तथा साथ ही साहित्य के स्त्रोतों का भी उल्लेख किया गया है।

❖ **लास्ट (1960)**

ने अपनी पुस्तक 'हेंड बुक फार सोशल स्टडीज टीचर्स इन इथोपियन एलीमेन्ट्री स्कूल' में पृष्ठ चार पर कहा है कि भूगोल को ठोस आधार पर पढ़ाने पर बल दिया जाये।

❖ **कारमिक्ट्रेल (1965)**

ने उत्तरी कैलीफोर्निया, बरकले में मानचित्र पठन तथा भौगोलिक समझ की धारणा संबंधी शिक्षण विधि द्वारा विकास का अध्ययन किया।

❖ सेमुएल, वेदात्यागम् (1976-77)

ने मद्रास में कक्षा नववीं के लिए भूगोल शिक्षण में 'मानचित्र कार्य में वृहत् धारणाओं की समझ' का अध्ययन किया।

उद्देश्य –

- मानचित्र में मापक की धारणा की समझ।
- मानचित्र में दिशा की धारणा की समझ।
- मानचित्र में रूढ़ चिन्हों की धारणा की समझ।
- मानचित्र में रंग की धारणा की समझ।
- क्षेत्र के आरेखीय प्रदर्शन की धारणा की समझ।

प्रतिदर्श –

इस अध्ययन में कोयम्बटूर शहर के 100 स्कूलों में 500 लड़कों एवं लड़कियों को चुना गया। इस अध्ययन में प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया था।

निष्कर्ष –

- जब धारणाओं की समझ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया तथा सामान्यतः उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- सभी छात्रों में क्षेत्र के आरेखीय प्रदर्शन, चिन्हों तथा रंग के धारणा के समझ से कम होती है। सभी समूहों में लड़कियों को छोड़कर मापक, दिशा, चिन्हं और आरेखीय प्रदर्शन की धारणाओं में उच्च सहसंबंध पाया गया।

साधन – शोध प्रबंध (2004-05) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ शर्मा (1979)

उदयपुर में माध्यमिक शाला स्तर पर भूगोल में मानचित्र कार्य में सामान्य त्रुटियों पर लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया। जिसमें इन्होनें बताया कि इन त्रुटियों का मुख्य कारण मानचित्र अंकन का अभ्यास ना कराया जाना, मानचित्र प्रयोग का शिक्षण में नियमित प्रयोग न होना तथा भूगोल के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अरूचि होना बताया।

साधन – शोध प्रबंध (2004-05) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ रूसिया (1980)

ने प्राथमिक स्तर के कक्षा चौथी के छात्रों द्वारा भौगोलिक धारणाओं का अध्ययन किया।

उद्देश्य –

- कक्षा चौथी के छात्रों को भौगोलिक धारणाओं के स्तर को ज्ञात करना।
- छात्र एवं छात्राओं के भौगोलिक धारणाओं संबंधी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के छात्रों को भौगोलिक धारणाओं संबंधी ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- छात्रों द्वारा भौगोलिक धारणाओं को समझाने में सामान्यतः की जाने वाली गलतियों तथा उनके समझने की सीमाएँ ज्ञात करना।
- छात्र भौगोलिक धारणाओं को स्पष्ट रूप से समझ सके इस हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष –

- भूगोल के विभिन्न विषयांशों (प्राकृतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक) में विद्यार्थियों द्वारा प्रतिशतों में कोई अंतर नहीं आया। अतः तीनों विषयांशों में उपलब्धि लगभग समान स्तर की पायी गई।
- छात्रों को भूगोल का ज्ञान, अवबोध एवं कौशल समान स्तर पर है, इन चारों में कोई अंतर नहीं है।
- शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों में भूगोल में प्राकृतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तीन विषयांशों का ज्ञान कम है। यद्यपि ग्रामीण छात्रों को शहरी छात्रों की अपेक्षा भौगोलिक धारणाओं का ज्ञान कम है।
- ग्रामीण छात्र तथा शहरी छात्रों को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक शाखाओं से संबंधित ज्ञान, अवबोध उपयोग एवं कौशल समान अनुपात में हैं।
- आर्थिक विषयांश (सामाजिक अध्ययन) शहरी क्षेत्र के छात्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में अवबोध एवं उपरोक्त में अंकों का वितरण कम है।
- छात्र एवं छात्राओं की भौगोलिक धारणाएँ समान है।

साधन – शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ **पोंकसे (1983)**

के द्वारा महाराष्ट्र के माध्यमिक स्कूल में VII, VIII, IX भूगोल पाठ्यक्रम में पढ़ाये जाने वाले संप्रत्यय, सूचकांकों का विश्लेषण किया।

निष्कर्ष –

- अधिकतर भूगोल पाठ्यक्रम संप्रत्यय पर आधारित नहीं था।
- सहायक सामग्री पाठशालाओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थी।
- ग्रन्थालय में पुस्तकों की कमी।
- फिल्म स्ट्रीप आदि तकनिकी साहित्यों का आभाव।

साधन – शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ भट्टाचार्य (1984)

'भूगोल शिक्षण के लिए विभिन्न मॉडल्स् का प्रभाव' उन्होनें निष्कर्ष निकाले की–

निष्कर्ष –

- पारस्परिक विधि और Concept Attainment Model से पढ़ाने पर विश्वसनीय अंतर नहीं पाया गया।
- आगमनात्मक शिक्षण विधी और पारस्परिक तरीके से पढ़ाई गई पद्धतियों में विश्वसनियता पायी गई।
- मानव भूगोल की अपेक्षा प्राकृतिक भूगोल में विद्यार्थियों की रूचि ज्यादा है।

साधन – 1. शैक्षिक अनुसंधान चतुर्थ सर्वेक्षण (1983–88)

2. शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ पाटिल (1985)

"सोलापुर जिले के ग्रामीण स्कूल में भूगोल शिक्षण में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन।"

निष्कर्ष –

उन्होनें पाया कि–

- ग्रामीण स्कूलों में भूगोल कक्ष नहीं है।
- अधिकतर शिक्षक व्याख्यान विधि या परम्परागत विधि से पढ़ाते हैं।
- समय की कमी के कारण भौगोलिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती ऐसा शिक्षक मानते हैं।

साधन – 1. शैक्षिक अनुसंधान चतुर्थ सर्वेक्षण (1983–88)

2. शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

❖ **जैनी (1987)**

"गुजरात के माध्यमिक स्कूल के भूगोल शिक्षण की स्थिति।"

निष्कर्ष –

उन्होनें पाया कि–

- 50 प्रतिशत स्कूलों में भूगोल शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है।
- 50 प्रतिशत स्कूलों में भूगोल पढ़ाने की पर्याप्त सुविधाएँ नहीं है।
- 42 प्रतिशत भूगोल शिक्षकों ने कोई रिफ्रेशर कोर्स नहीं किया है।

साधन – शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्था,भोपाल।

❖ **सिंह (1988)**

ने अपने एक पेपर 'स्टडीग्ज दी ग्लोब ऍण्ड मेप ऑफ दी वर्ल्ड' में कहा है कि पाठ्यपुस्तक की अपेक्षा मानचित्र और ग्लोब बहुत उपयोगी शिक्षण सामग्री है।

साधन – शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्था,भोपाल।

❖ गुप्ता (1989)

'भौगोलिक शिक्षण साहित्य का विभिन्न उम्र के बालकों में भौगोलिक संप्रत्यय को समझने की अवधारणा।'

निष्कर्ष –

- कक्षा छटवीं के विद्यार्थियों को कुल 100 में से औसत 8.84 अंक प्राप्त हुए है। जिसमें छात्रों को 10 प्रतिशत प्राप्त हुए जिसकी तुलना में छात्राओं को 8.2 अंक प्राप्त हुए।
- कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों को कुल 100 में से औसत 10.87 अंक प्राप्त हुए जिसमें छात्राओं का 9.90 प्रतिशत तथा छात्रों को 11.82 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।
- कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को कुल 100 में से औसत 3.76 अंक प्राप्त हुए, जिसमें छात्राओं को 11.27 प्रतिशत तथा छात्रों को 17.26 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।

इन सभी छात्रों को पुनः रिएडमिनिस्ट्रेशन तथा नैदानिक उपचार अम्बाला के स्कूल में एक प्रायोगिक समूह पर किया गया तो यह ज्ञात हुआ की कक्षा छटवीं तथा आठवीं के विद्यार्थियों का कार्य प्रदर्शन अच्छा नहीं है।

साधन – शैक्षिक अनुसंधान पंचम सर्वेक्षण 1988–92

❖ सक्सेना (1990)

ने प्राथमिक स्तर के कक्षा चौथी के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास में व्यक्तित्व के तथ्यों तथा अध्यापक की अध्ययन विधियों का अध्ययन किया है।

उद्देश्य –

- कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल का विकास करना।
- कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास पर व्यक्तित्व तथ्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- कक्षा चार में भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों के मत भौगोलिक विकास में उपयुक्त अध्ययन विधियों के विषय में जानना।
- कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास व व्यक्तित्व तथ्यों का अध्ययन करना।

साधन – शोध प्रबंध (2001–02) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल।

❖ खान रफत (1993–94)

ने 'कक्षा नववीं में भूगोल विषय में छात्र–छात्राओं की न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारण एवं उनके निदानात्मक उपाय' का अध्ययन किया।

उद्देश्य –

- कक्षा नववीं में भूगोल में छात्र–छात्राओं के न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।

- त्रुटियों के कारण का पता लगाना एवं उनके द्वारा कि जाने वाली त्रुटियों को दूर करने के उपाय सुझाना, इस शोध का मुख्य उद्देश्य था।

न्यादर्श –

नगर की दो उच्च माध्यमिक शालाओं (एक बालक व एक बालिका) के कक्षा नवमीं के 200 छात्र–छात्राएँ।

निष्कर्ष –

- माध्यमिक स्तर पर भू–आकृति विज्ञान मानचित्र अध्ययन में 41.35 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
- भू–आकृति विज्ञान पृथ्वी की बाह्य शक्तियों द्वारा निर्मित भू–आकृतियों के ज्ञान में 43 प्रतिशत त्रुटि।
- घाटियाँ, झीलों, गार्ज में अंतर के ज्ञान में 49 प्रतिशत त्रुटि।
- भू–आकृतियों के सही ज्ञान के संबंधी त्रुटि 44 प्रतिशत है।
- पृथ्वी के बाह्यशक्तियों के ज्ञान संबंधी परीक्षण में 50 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
- मानचित्र अध्ययन संबंधी भू–आकृतियों के रेखांकन के ज्ञान में 30 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
- स्थिति के ज्ञान में छात्र–छात्राएँ 48 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।
- मापक, मानचित्रों के स्थानों के मध्य दूरी के ज्ञान में छात्र–छात्राएँ 49 प्रतिशत त्रुटि करते हैं।

साधन – शैक्षिक शोध सारांश (1994–2003) शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

❖ सिंह. (1998)

के 'कक्षा चार के सामाजिक विज्ञान के प्रथम अध्याय पृथ्वी और उसका पर्यावरण की सरल एवं कठिन अवधारणाओं का अध्ययन किया।'

निष्कर्ष –

- शासकीय शालाओं में शिक्षण की नई तकनीकी पद्धतियों, शैक्षिक सामग्री तथा न्यूनतम भौतिक सुविधाओं का आभाव पाया जाता है जबकि अशासकीय शालाओं में नहीं।
- शासकीय स्कूलों में अध्यापन कार्य संबंधी सुविधाएँ अशासकीय स्कूलों की अपेक्षाकृत कुछ अधिक है।
- परिवहन संसाधन संबंधी फर्नीचर, साज–सज्जा, आदि संबंधी सुविधाएँ शासकीय स्कूलों की अपेक्षाकृत अशासकीय स्कूलों में अधिक है।
- शासकीय शालाओं में प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रभाव नहीं है, तथा अशासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव पाया गया है।
- शासकीय विद्यालयों में अभिभावकों का योगदान, जनभागीदारी नगण्य तथा अशासकीय विद्यालयों में पूर्ण सहयोग, जनसहभागीता सक्रिय रूप से देखी गई।
- ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों को मूल्यांकन शिक्षण की नवीन प्रविधि व दक्षताओं का ज्ञान शहरी क्षेत्र के शिक्षकों से अधिक नहीं वे अब भी परम्परागत ढंग से शिक्षण कार्य करते हैं।

साधन – शैक्षिक शोध सारांश (1994–2003) शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

❖ दुबे (2000)

ने प्रायमरी शिक्षण के लेख में 'हाईस्कूल स्तर पर भूगोल शिक्षण में अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुतीकरण का प्रभाव' देखा गया।

निष्कर्ष –

- प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के छात्रों की उपलब्धि समान स्तर की है।
- पूर्व परीक्षण में छात्रों का पूर्वज्ञान बहुत ही अल्प था।
- छात्रों की उपलब्धि पर अनुदेशन उद्देश्यों के 'प्रायोगिक और नियंत्रित समूहों के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया, को अस्वीकार किया गया।'
- परम्परागत शिक्षण विधि से छात्र नवीन शिक्षण की अपेक्षा कमी सीखते है और अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुत कर दिये जाने पर शिक्षण अधिक प्रभावी व रोचक हो जाता हैं।

साधन – प्राईमरी शिक्षण. जनवरी (2000) पृष्ठ क्रमांक–35

❖ भट्टाचार्य जी.सी. (2001)

'प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण और शैक्षिक क्रीडन की उपादेयता' प्राइमरी शिक्षण जनवरी 2001 (पृष्ठ संख्या 32–34) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली।

उपादेयता यह पायी कि अधिगमकर्ता केन्द्रित प्रणाली होने के कारण तथा क्रिया के माध्यम से सीखने पर बल देने के कारण यह प्रणाली बच्चों के लिए अधिक आकर्षक और मनोवैज्ञानिक पायी गई। प्रयास करते हुए सीखना इस प्रणाली के माध्यम से संभव हो पाता है। जहाँ मानचित्र पर शब्द चित्र विशेष प्रभावी नहीं बन पाता है, वहाँ शैक्षिक क्रिडन भूगोल शिक्षण के क्षेत्र में पर्याप्त सहायक सिद्ध होता है।

- भौगोलिक स्थान तथा संकल्पनाओं के नामाधारित क्रीडन;
- त्यौहार, परंपरा, रीति-रिवाज, प्रदर्शन संबंधी क्रीडन;
- विश्व के विभिन्न क्षेत्र तथा देशों के निवासियों की वेशभूषा तथा व्यवहार संबंधी क्रीडन;
- विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक क्रियाओं से संबंधित व्यावहारिक क्रीडन; आदि।

साधन – प्राईमरी शिक्षण. जनवरी (2000) पृष्ठ क्रमांक 32-34

❖ **दुबे अनीता (2002-03)**

'हाई-स्कूल स्तर पर भूगोल में मानचित्र अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनके निदानात्मक उपाय।'

उद्देश्य –

- छात्रों में भूगोल अध्ययन के प्रति रूचि का अध्ययन करना।
- भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन में छात्रों को होने वाली कठिनाईयों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

- प्रश्न-पत्रों में मानचित्र संबंधी समस्याओं, प्रश्नों के उचित मानदण्डों का निर्धारण करना तथा वर्तमान प्रश्न-पत्रों में इस कौशल के मूल्यांकन की स्थिति ज्ञात करना।
- मानचित्र उपयोग की सही जानकारी छात्र-छात्राओं को प्रदान करना।
- मानचित्र अध्ययन में होनेवाली त्रुटियों के कारणों की सही जानकारी मालूम करना।
- त्रुटियों को दूर करने हेतु उपाय ढूंढ़ना।

निष्कर्ष –

- शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व-परीक्षण एवं पश्च-परीक्षणों में किसी प्रकार का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- पूर्व परीक्षण एवं पश्चात्-परीक्षणों ग्रामीण एवं शहरी की तुलना ही परीक्षण से करने पर दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

साधन – शैक्षिक शोध सारांश (1994-2003) शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

❖ **कुमारी गीता तोमर (2002-2003)**

ने 'ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रो में कक्षा आठवीं के सामाजिक अध्ययन की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं कठिन शिक्षण बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन' किया।

उद्देश्य –

- कक्षा आठवीं के भूगोल विषयांश ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिन्दूओं का अध्ययन करना।
- कक्षा आठवीं के शहरी बालक एवं बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा आठवीं के शहरी बालकों एवं ग्रामीण बालकों की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा आठवीं की शहरी बालिकाओं एवं ग्रामीण बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा आठवीं के ग्रामीण बालक एवं ग्रामीण बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

- कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया।
- कक्षा आठवीं के ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं में भूगोल विषय की अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिन्दुओं की तुलना करने पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया।

- शहरी क्षेत्र में भी बालक-बालिकाओं की तुलना करने पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया और यह अंतर छात्राओं के पक्ष में था।
- शहरी और ग्रामीण छात्रों की तुलना करने पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया, यह भी शहरी छात्रों के पक्ष में था।
- शहरी और ग्रामीण बालिकाओं की तुलना करने पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया।

साधन – शोध प्रबंध (2002-03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल.

❖ **कु. पुनम मुदलियार (2004-05)**

ने 'आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में मानचित्र संबंधी समस्याओं पर अधिगमकर्ता पारस्परिक क्रिया विधि के प्रभाव का अध्ययन' किया।

उद्देश्य –

- मानचित्र संबंधी समस्या की पहचान करना।
- समस्या कौशल पर अधिगमकर्ता पारस्परिक क्रिया विधि बनाना।
- अधिगमकर्ता पारस्परिक क्रिया-विधि कार्यक्रम का अनुप्रयोग।
- अनुप्रयोग के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

- पूर्व-परीक्षण में दोनों विद्यालय की मानचित्र संबंधी उपलब्धि समान पायी गई।

- पश्च परीक्षण के बाद सभी कौशलों को अलग-अलग परीक्षण किया जिसमें-

1. कौशल-I 'अक्षांश - देशांतर के ज्ञान' में शिक्षण प्रभावकारी नहीं पाया गया।
2. कौशल-II 'दिशा संबंधी ज्ञान' में शिक्षण विधि प्रभावकारी नहीं पायी गई।
3. कौशल-III 'मापनी संबंधी ज्ञान' में शिक्षण विधि प्रभावकारी पायी गई।

अधिगमकर्ता पारस्परिक क्रिया-विधि द्वारा शिक्षण के पश्चात् प्रायोगिक समूह व नियंत्रित समूह में अंतर पाया गया, अर्थात् मानचित्र संबंधी समस्या पर यह शिक्षण विधि प्रभावकारी सिद्ध हुई।

साधन - शोध प्रबंध (2004-05) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल।

❖ **सोनवणे स्वाती श्रीकांत (2004-05)**

'कक्षा पांचवी के छात्रों की मानचित्र पठन में आनेवाली प्रमुख समस्याएँ एवं उपाय योजना।'

उद्देश्य -

- छात्रों को दिशा दिखाने में आनेवाली समस्या का अध्ययन करना।
- मानचित्र के मूलभूत घटकों को समझने में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना।
- मानचित्र का शीर्षक एवं घटकराज्य को समझने में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना।

- मानचित्र भरण में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना।
- मानचित्र पठन में आनेवाली समस्याओं पर उपाययोजना तथा सुझाव देना।

अध्यापन विधि – प्रायोगिक विधि,

निष्कर्ष –

- शिक्षकों ने शैक्षिक साहित्य को इस्तमाल करके दिशा के बारे में अध्यापन किया तो वह छात्रों के ज्यादा समय तक ध्यान में रहता हैं और वह बराबर दिशा दिखाते हैं।
- शिक्षको ने प्रत्यक्ष मानचित्र का कक्षा में इस्तमाल करके विविध शैक्षिक सामग्री से सिखाने पर वह मानचित्र पठन करते है।
- कक्षा में छात्रों को मानचित्र के सहयोग से अध्यापन किया तो और छात्रों को कृती करके शामिल किया तो छात्र मानचित्र पठन बराबर करते है।

साधन – शोध प्रबंध (2006-07) पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

❖ **भोजने संभाजी (2004-05)**

'कक्षा दसवी के छात्रों को मानचित्र भरण में आनेवाली समस्याऐं एवं उपाय योजना।'

उद्देश्य –

- मानचित्र भरण में होनेवाली गलतियों को ज्ञात करना।
- मानचित्र भरण में होनवाली गलतियों का विश्लेषण करना।

- मानचित्र भरण में होनेवाली गलतियों के सुधार हेतु उपाय योजना देना।

अध्यापन पद्धति – प्रायोगिक पद्धिती/ विधि,

निष्कर्ष–

(अ) पूर्व परीक्षण पर से–

- छात्रों को रूढ चिन्हं एवं खूणाओं के बारे मे जानकारी नही हैं।
- छात्रों को अक्षांश व देशांन्तर के बारे में जानकारी नहीं है।
- छात्रों को भारत सीमा, तथा घटक राज्यों के सीमा के बारे में जानकरी नहीं है।

निष्कर्ष

(ब) पश्च परीक्षण पर से –

- रूढ़ चिन्हं एवं खूणा चार्ट दिखाकर अध्ययन किया तो छात्रों के समझ में आये।
- छात्रों को दिशा समझने में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताने से वह दिशा समझ सकें।
- मानचित्र भरण के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव देने से यह मानचित्र सही भरण करते हैं।
- सीमा, विस्तार समझाने पर वह सही मानचित्र में दिखाते हैं।

साधन – लघुशोध प्रबंध (2004–05), पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।

❖ काजल शर्मा (2006-07)

'भूगोल विषय में कक्षा नववीं के छात्रों को मानचित्र पठन में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन एवं उपाय योजना।'

उद्देश्य –

- कक्षा नववीं के छात्रों को मानचित्र पठन में आनेवाली कठिनाईयों को ज्ञात करना।
- मानचित्र पठन में होनेवाली गलतियों को ज्ञात करना।
- मानचित्र पठन में होनेवाली गलतियों के सुधार हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष –

- अध्यापन शैक्षिक सामग्री के इस्तमाल करके किया तो छात्रों के ज्यादा समय ध्यान में रहता है।
- कक्षा में मानचित्र का इस्तमाल करके अध्यापन किया तो छात्र अच्छे तरीके से मानचित्र पढ़ सकते हैं।
- कक्षा में छात्रों का कृतीयुक्त सहभागी किया तो छात्रो की गलतियाँ कम होती हैं।
- कक्षा में पारम्पारिक विधि से अध्यापन करने के बजाय नई तकनिके तथा शैक्षिक सामग्री का इस्तमाल करके अध्यापन किया तो विद्यार्थियों की रूचि बढ़ सकती है।

साधन– शोध प्रबंध – (2006-07), पुणे, विश्वविद्यालय, पुणे